श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. : 2

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर Answer Sheet

2021-22

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१) सुगमाना
(२) असंख्यातवे
(३) पंचपरमेष्ठी
(४) किर्तन करने
(५) अर्धपुद्गलपरावर्त
(६) बारहव्रतधारी
(७) प्रत्येक वनस्पती
(८) कर्मक्षय
(९) कुंभस्थल
(१०) अवगाहना
(११) सूक्ष्मना
(१२) परभव
(१३) प्रज्वलित अग्नि
(१४) राजकारण
(१५) अंतरकरण
(१६) अपमानित
(१७) सम्यकदृष्टि
(१८) अनिवृत्तिकरण
(१९) वराही संहिता
(२०) क्षायो पशमिक

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१) मिश्र मोहनीय
(२) वशहमिहिर
(३) धर्मबाचि अणगार
(४) मिश्रभाव
(५) स्थूलभद्र
(६) शमन
(७) आस्तिकाय
(८) अंतराय कर्मका
(९) दृष्टीवाद
(१०) निसर्ग सम्यकत्व
(११) कल्याण का
(१२) सम्यकदर्शन
(१३) आहारक
(१४) मिश्र गुणस्थान
(१५) मिथ्यात्व मोहनीय

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१) खडे
(२) दोनो प्रकारके
(३) राजाओके
(४) आरभं

(५) मृत्यूको
(६) अग्नि
(७) मधु जैसे पिले
(८) अधिक
(९) सिंह
(१०) तेतीस सागरोपम
(११) संयोगसे
(१२) शत्रु
(१३) उत्तर वैक्रय
(१४) उदय से
(१५) गजेंद्र के
(१६) अर्ध
(१७) जितना
(१८) छेदे हुमो
(१९) शांतता
(२०) आयुष्य कर्म

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	८	(६)	५
(२)	४	(७)	3
(३)	६	(८)	९
(४)	१०	(९)	१
(५)	2	(१०)	७

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१) अंतमुहूर्त (४८)
(२) १८
(३) ५०० धनुष्य
(४) 11
(५) ४५
(६) लाख योजन
(७) 2
(८) ९
(९) ७४
(१०) सव्वालाख

प्रश्न-६ ✓ या ×

(१) ×
(२) ✓
(३) ✓
(४) ×
(५) ×
(६) ×
(७) ✓
(८) ×
(९) ×
(१०) ✓

प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर

(१) १४
(२) 20
(३) ५
(४) १७
(५) ७
(६) १९
(७) १०
(८) ८
(९) १९
(१०) १2

	+		+		+		+		+		+		+		=	

प्रश्न-१ मिले हुए गुण | प्रश्न-२ मिले हुए गुण | प्रश्न-३ मिले हुए गुण | प्रश्न-४ मिले हुए गुण | प्रश्न-५ मिले हुए गुण | प्रश्न-६ मिले हुए गुण | प्रश्न-७ मिले हुए गुण | प्रश्न-८ मिले हुए गुण | कुल गुण

रीमार्क

जांचनेवाले की सही

प्रश्न - ८

१. जीव के विषय मे मिश्रमोहनीय कर्म के उदय से सम्यत्व और मिथ्यात्व के मिलन से जो भाव उत्पन्न होते है और अंतमुहूर्त तक रहते है उसे मिश्रगुणस्थान कहते है। जो जीव सम्यक्त्व अथवा मिथ्यात्व के एक भाव मे प्रवर्तमान है, उसे सम्यक्त्व अथवा मिथ्यात्व हो पर जो जीव उभय भाव में होता है, उसे जात्यंतर तीसरा भाव-मिश्रभाव होता है। मिश्र गुणस्थान मे रहा हुआ जीव दुसरे भव का आयुष्य नही बंधता और मरता भी नही है। सम्यग्दृष्टी अथवा मिथ्यात्वी बनकर मरता है।

२. ऐसे साधु छः काय जीवो को जरा भी तकलीफ नही हो इसके लिये सावधान रहते है, गोचरी वोहरने को जाय वहा कोई भी वस्तू कच्चे पानी के साथ, अग्नि के साथ, फल आदि वनस्पति के साथ या कच्चे नमक के साथ स्पर्श की हुई हो, तो वो वस्तू साधू नही ले सकता साधु के लिए वो त्याज्य बन जाती है, उसी तरह गोचरी वोहरने वाला भी इसमे से कोई वस्तू को स्पर्श किया हुआ हो तो उसके ~~साथ~~ हाथ का आहार पानी लेना साधू को नही कल्पता।

३. भद्रबाहुस्वामी ने विशाल साहीत्य रचा है, जिनशासन का ज्ञान का खजाना है। ज्यादा सरल, समृद्ध बनाया है १) दशाश्रुत स्कंध २) बृहत् कल्प एवं ३) व्यवहारश्रुत इन छेद सूत्रो की रचना श्रीभद्रबाहुस्वामी ने की है। आपश्री ने अनेक निर्युक्तियो के रुप मे भी प्रसिद्ध है। पर्वाधिराज पर्व के दरम्यान भाव एवं सम्मानपूर्वक पढे जाना "कल्पसूत्र" भी उनकी ही रचना है।

४. सबको जघन्य से स्वाभाविक शरीर अंगुल के असंख्यात वे भाग जितना होता है उत्कृष्ट से पांचसौ धनुष्य शरीरवाले नारकी होते है और देवताओं का उत्कृष्ट से सात हाथ शरीर होता है। अवगाहना द्वार मे आगे बढते हुए कहते है की अन्य बीस दंडक के विषय में जघन्य से शरीर की अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग जितनी होती है, अर्थात् चोवीस के चोवीस दंडको मे शरीर की जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग जितनी होती है।

५. पाप का शमन करने वाले हे पार्श्वजिन! तुम्हारे प्रभाव से जिसने गर्विष्ठ शत्रु राजाओं के समुह को जीता है, तीक्ष्ण खडग (तलवार) के प्रहार से मस्तक कट जाने से नाचता है, शरीर जिसमें तथा भाले से भेदे गये हाथी के बच्चो की चित्कार से व्याप्त रणसंग्राम में ऐसे सुभट उज्वल यश को पाते है। रोग, पानी, अग्नि, सर्प, चोर, शत्रु, सिंह, हाथी तथा रणसंग्राम ये सभी भय ही पार्श्वनाथ जिनेश्वर के नाम का किर्तन करने से शांत हो जाते है, शम जाते है।